प्रकाशन की तिथि 01.4.2018

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 41 अंक 4

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 500 रुपये

अप्रैल 2018 विक्रम सम्वत् 2074 चैत्र-वैशाख

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011–23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने चैत्र शुक्ल 5 दिन शनिवार सम्वत 1932 विक्रमी (सन् 1875, 10 अप्रैल) को गिरगांव रोड मुम्बई में डॉ. माणिकजी की बाग वाड़ी में आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज की स्थापना एक नव भारत के निर्माण एवं सामाजिक क्रान्ति हेतु अत्यन्त महत्व पूर्ण कार्य था भारत उस समय परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा था। विदेशी आक्रमण कारियों ने भारत की संस्क्रति व इतिहास को मिटाने का पूरा प्रयत्न किया, मत परिवर्तन की आंधी चलाई, धरा को रक्त रजित किया। हम अपना गौरव इस तूफान में भूल गए थे वेद ज्ञान जो हमारी उन्नति का मूल था उससे दूर होते गए फल स्वरूप समाज मत मतान्तर सम्प्रदायों में टूटता गया आर्यावर्त का व्रहत्तर स्वरूप सिमट गया अन्ध विश्वास व पाखण्डों में समाज घिर गया कुरीतियों को ही धर्म व संस्कार मानने लगे थे वेद को भूल अवैदिक मान्यताऐं बढ़ गयी ऐसे में महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत में जन जागरण के सूत्र धार बने आर्य समाज की स्थापना की जहाँ से वेदों का प्रचार होता रहे और अन्ध विश्वास व पाखण्डों को दूर करते रहें।

आर्य समाज के छठे नियम में भी यही भावना है अर्थात् संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना। आर्य समाज की स्थापना ही संसार के उपकारार्थ हुई ।

आज जो अनेक, पाखण्ड व अन्ध विश्वास समाज में चल रहे हैं उनमें धर्म के ठेकेदार, तान्त्रिकों व कुछ लोगों का निजी स्वार्थ है उनका व्यवसाय चल रहा है वह समाज को सत्य से परे रख रहे हैं भ्रम फैलाने वाले लोग आर्य समाज का विरोध करते हैं।

मूर्ति पूजा आज व्यवसायी लोगों के धनजिन का साधन है जब कि वेद में कहीं भी मूर्ति पूजा नहीं है अपितु लिखा है **"न तस्य प्रतिमाऽस्ति"** अर्थात् उस परमात्मा की कोई प्रतिमा नहीं है वह निराकार सर्वव्यापक अजन्मा व अनादि अनन्त है।

मूर्ति पूजा कराने वाले व्यवसायी भी जानते हैं ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं वेद में कहीं भी मूर्ति पूजा नहीं है फिर भी वह अपना व्यवसाय चलाने को मूर्ति पूजा करते कराते हैं पुराणों में ऐसी ही मिथ्या काल्पनिक व विरोधी कथाएँ भरी पड़ी हैं हमारा समाज ही आज पौराणिकता पर आधारित हो गया है सहस्रों देवी देवता उनकी मूर्तियों, अवतार उनके मन्दिर भारत में चारों ओर फैले हैं। मूर्ति पूजा हेतु समाज में एक भय का वातावरण बनाया जाता है कि पूजा न की गयी तो बड़ा अनर्थ हो जाएगा (कलावती की सत्यनारायण की कथा कही जाती है। कही लोहे की नाव काठ की हो जाती है कहीं डूब जाती है। ऐसे ही देवी जागरण में तारा रानी की कथा छिपकली बनने की जोड़ दी जाती है। एकादशी करवा चौथ आदि की व्रत कथाऐं मन गढ़न्त व काल्पनिक गढ़ रखी हैं यहां तक कि महिलाऐं डार के कारण कब्र मजार व पीरों को पूजने को जाती हैं वहां चादर चढ़ाती हैं। पिण्डदान, मृतक भोज, श्राद्ध, भूत प्रेत, तांत्रिक कर्म, गुरूडम, अवतार वाद आदि अनेक सामाजिक बुराइयाँ व कुरीतियां तथा अन्ध विश्वास हैं।)

सती प्रथा बाल विवाह जैसी कुप्रथाओ को दूर किया गया विधवा स्त्री का पुनर्विवाह आरम्भ किया गया। महिलाओ को शिक्षा से वंचित रखा जाता था महिलाओं के लिए विद्यालय खोले गए उनकी शिक्षा आरम्भ की गयी महिलाओं एवं शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था वह अधिकार आर्य समाज ने दिलाया आज महिलाऐं आर्य समाज के प्रयत्न से पढ़ रही हैं तथा उच्च पदों पर समाज के प्रयत्न से पढ़ रही हैं तथा उच्च पदों पर भी प्रतिष्ठित होकर समाज व राष्ट्र की सेवा कर रही हैं, आर्य समाज राष्ट्र में एक जागरुक प्रहरी की भांति खड़ा हुआ है सामाजिक क्रान्ति में अग्रणी है आर्य समाज किसी जाति पन्थ सम्प्रदाय आदि से जुड़ा हुआ नहीं है यह एक जनजागरण हेतु सामाजिक क्रान्ति लाने के लिए एक मिशन है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का बचपन का नाम मूल शंकर था सन 1837 (1837) ई. माघ वदी 18 संवत् 1894 वि. को शिव रात्रि के पर्वपर मूल शंकर को बोध हुआ था कि पाषाण की मूर्ति ईश्वर नहीं हो सकती अतः ईश्वर के सच्चे स्वरूप की तलाश में घर छोड़ दिया मठ, मन्दिर, आश्रमों साधु सन्यासियों के पास घूमते फिरते किसी प्रकार सन् 1860 में स्वामी विरजानन्द की कुटिया पर पहुँचे वहां दण्डी स्वामी से तीन वर्ष वेद वेदांगों की शिक्षा ली सन् 1863 में गुरु से भीषण प्रतिज्ञा लेकर विदा ली।

दण्डी स्वामी ने दक्षिणा में कहा था कि वेद का प्रचार करना अन्ध विश्वास व पाखण्डों को दूर करना उस समय भारत विदेशी अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों में जकड़ा था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने फिर अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र, समाज व पाखण्डों के निवारण हेतु तथा वेद प्रचार हेतु समर्पित कर दिया। महर्षि ने अपने गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य किया और भारत वर्ष में वेदों की दुन्दुभि बजा दी वरना भारतीय जन वेदों को तो भूल ही गए थे। वेद ही विश्व की श्रेष्ठता का मार्ग हैं प्राचीन काल में वेद एक ही मत था उससे चहुँ ओर सुख शान्ति थी गुरुकुल वेद शिक्षा के स्रोत थे विदेशी यहां निजज्ञान हेतु आते थे महाभारत युद्ध से कुछ समय पूर्व से जब से वेद ज्ञान क्षीण हुआ समाज में ईर्ष्या विरोध बढ़े फल स्वरूप महाभारत युद्ध हुआ जहां वैदिक काल में भाई ने भाई के लिए सिंहासन को त्याग दिया था पिता की आज्ञा का पालन किया वहां वेद से दूर जाते ही भाई भाई के एक इंच भूमि के लिए भी प्राण लेने को तत्पर हो गया। (अवैदिक कारणों मान्यताओं से ही भारत का गौरव धूमिल हो ता गया और अनेक मत मतान्तर उठ खड़े हुए सबका अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग शुरु हो गया सब एक दूसरे के विरोधी हो गए फल स्वरूप व्रहद स्वरूप वाला आर्यावर्त, चक्रवर्ती राज्य वाला गौरव शाली आर्यावर्त खण्ड विखण्ड हो गया छोटे राज्यों में बट गया और पश्चात परतन्त्रता को समर्पित हो गया।

अब विभिन्न मत मतान्तर वालों ने गौरवशाली भारत की संस्कृति व इतिहास पर कीचड़ उछालनी आरम्भ कर दी राम कृष्ण को कालपनिक बताने लगे पुराणों की अश्लीलता का उपहास कर हिन्दुओं का मतान्तरण करने लगे वेदों को गड़रियों के गीत बताने लगे संस्कृत को अनर्थक बताने लगे यहां मतान्तरण की आंधी चला दी संस्कृत स्कूल बन्द होने लगे गुरुकुलों को नष्ट किया जाने लगा अंग्रेजी मिशनरियां मैकाले की योजनानुसार अंग्रेजी को महत्व देने लगी अर्थात् भारत में भारतीय संस्कृति को मिटाने का पूरा षड्यन्त्र चलाया गया। इन सब बातो को ध्यान में रखते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 1875 (1875) में आर्य समाज की स्थापना की थी जहां से दिन रात वेद की दुन्दुभि बजती रहे भारत की संस्कृति व इतिहास का पुनः अवलोकल हो भारत का प्राचीन गौरव पुनः प्राप्त हो भारत में राम कृष्ण व अर्जुन जैसे विद्वान धर्नुधारी पुनः बनें गार्गी गान्धारी कुन्ती सीता मैत्रेयी शकुन्तला जैसी महान नारियां हो इसलिए ही आर्य समाज की स्थापना की थी। आज हम समस्त भारतवासियों को आर्य समाज के ध्वज के नीचे आकर **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम'** का जय घोष करना चाहिए ताकि हम अपनी खोई हुई भारतीय संस्कृति, इतिहास की गौरव रूपी गरिया को पुनः प्राप्त कर सकें। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमें अपने गौरव का सत्य मार्ग पुनः दिखा दिया और उसे पाने के लिए आर्य समाज के दीप प्रज्वलित किए ।

डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह, खुर्जा

मो. 8979794715

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

– आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

विगत मास मार्च को सभी आर्य संगठनों ने आर्य-समाज का 144वाँ स्थापना दिवस बहुत उत्साह पूर्वक मनाया। महर्षि दयानन्द की यह हार्दिक इच्छा थी कि भारत देश अपनी खोई हुई मर्यादा को पुनः प्राप्त करे। प्राचीन काल की भाँति इसे पुनः विश्व गुरु होने का गौरव मिले। शताब्दियों से आ रही पराधीनता से देश मुक्त हो। चतुर्दिक् अज्ञान-अविद्या का क्षय हो। आर्य सन्तानें वैदिक धर्म का अवलम्बन करके अपना और संसार का कल्याण कर सकें। राष्ट्र में कोई शोषक न हो और न ही कोई शोषित। सब अपने-अपने वर्णाश्रम धर्म का पालन करते हुए परमलक्ष्य की प्राप्ति करें। सर्वत्र शान्ति का साम्राज्य हो। दुःख, अशान्ति, दुर्भाग्य का सर्वथा विनाश होकर पारस्परिक सौहार्द स्थापित हो। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने आर्य-समाज की स्थापना की। उसके नियम निर्धारित किए और समाज का उद्देश्य सबके सामने रखते हुए यह घोषणा की कि "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" उनके इस आह्वान का व्यापक प्रभाव हुआ। सारे देश में आर्य-समाजों की स्थापनायें हुईं। विद्यालयों, गुरुकुलों की स्थापना हुई। सारे देश में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देने लगे। आर्य-जाति का प्रसुप्त स्वाभिमान पुनर्जागरित हो गया। पाखण्डखण्डनी पताका के प्रबल पवन ने पखण्डियों के गढ़ ढहाने शुरु कर दिए। देश का शोषण करने वाली विदेशी सत्ता के तो मानो हाथ के तोते ही उड़ गए। स्वामीजी के अनुधायियों ने प्राण की बाजी लगाकर हर स्तर पर उनके उद्देश्य की सफलता के लिए कार्य किया। गुरुकुलों में वैदिक संस्कृति में निष्ठा रखने वाले विद्वान् तैयार होने लगे। देश की दासता को छिन्न-भिन्न करने के लिए क्रान्तिकारियों का समूह तैयार होने लगा। सारे देश में, समाज में परिवर्तन का यह दौर स्पष्ट रुप से देखा जाने लगा। आर्य-समाज और ऋषि दयानन्द के प्रयास से आर्यावर्त्त अपने विस्मृत स्वाभिमान का पुनरवलोकन करने में समर्थ हो सका। महर्षि ने आर्य-समाज के माध्यम से स्वराष्ट्र, स्वभाषा, स्वसंस्कृति और स्वाधीनता का शंखनाद किया। आर्य-समाज अकेला संगठन है जिसने सबसे पहले देश में राष्ट्रीय चेतना का सूत्रपात किया। अंग्रेजों के आतंकी शासनकाल में स्वामी जी ने राष्ट्रीय परतन्त्रता की समाप्ति के लिए निर्भीक भाव से अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "आर्याभिविनय" में कहा "अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी शासन न करें। हम कभी पराधीन न हों।" उस आतंकी वातावरण में कोई नेता इस प्रकार का साहस नहीं कर सकता था। 1942 में गाँधी जी का 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा इसी सोच की उपज है। ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, आर्य-समाज की विचार धारा हमेशा ही क्रान्ति कारियों का प्रेरणास्रोत बनी रही। यही कारण है कि ऋषि के अनुधायियों स्वामी श्रद्धानन्द, श्याम जी कृष्ण वर्मा, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी आदि महापुरुषों ने किसी भी स्थिति में भयभीत हुए बिना ऋषि की विचार धारा को पुष्पित-पल्लवित करने में अपना सर्वस्व होम दिया। किमधिकम् – आज आवश्यकता है कि आर्य जन पारास्परिक मनोमालिन्य को दूर कर ऋषि द्वारा संस्थापित आर्य-समाज की विचारणा को जन-जन तक पहुँचायें। इसी से स्थापना दिवस मनाना सार्थक होगा। ऋषि ऋण से हमें मुक्ति मिलेगी।

हरड़ सभी रोगों से बचाव करती है

– अभय कुमार जैन

हरड़ का संस्कृत में हरीतकी, अभया, पूतना, अमृता, हेमवती, चेतकी, शिवा, विजया, शुक्रा, सृष्टा, सिद्धा, प्राणदा आदि कहते हैं। हिन्दी में हरड़, पंजाबी में हरीड़, बंगला में हरीतकी, तमिल में कुडकाएं, तेलगु में करकाये कहते है। हरड़ का पेड़ भारत के हर भाग में पाया जाता है। छोटी हरड़, पीली हरड़, बड़ी हरड़ तीनों एक ही वृक्ष के फल हैं, जो अवस्था भेद से भिन्न हो जाते हैं। हरीतकी वृक्ष के फल गुठली होने से पूर्व गिर जाते है या तोड़कर सुखा लिये जाते हैं। उन्हें छोटी हर्रे कहते है। गुठली होने के बाद प्रौढ़ावस्था में जो अपरिपक्व फल गिर जाते हैं, वे पीली हर्र कहलाते हैं, जिनका प्रयोग रंगाई के काम आता है। हरड़ का पूर्ण परिपक्व फल बड़ी हर्र कहलाता है, जो मुख्बे के काम आता है। यह गुठली वाला होता है। यह रक्ताल्पता, मोतीझरा, बवासीर, संग्रहणी, जीर्ण, मलेरिया, ज्वर, हृदय रोग, खांसी, आफरा, तिल्ली के रोग, दमा, वमन तथा फेफड़ों में कफ भर जाने जैसे रोगों में उपयोगी होता है।

हरड़ के चमत्कारी गुणों के कारण ही आयुर्वेद में इसे माता के समान हितकारी कहा है।

हरड़ के कई उपयोग हैं। हर ऋतु के अनुसार, इसका इस्तेमाल होना चाहिए। जैसे वर्षा में सेंधा नमक के साथ, जाड़े में शर्करा के साथ, शिशिर में पिप्पली के साथ, बसंत में शहद के साथ तथा गर्मी में गुड़ के साथ उपयोग करना चाहिए।

हरड़ शरीर से रोग का अंश निकालती है और रोग से मुकाबला करने की शक्ति देती है। हरड़ का मुख्य काम शरीर के सभी अंगों से अनावश्यक पदार्थों को निकालकर मस्तिष्क, पेट, रक्त आदि को प्राकृतिक दशा में नियमित करना है।

हरड़ के उपयोग

काली हरड़ को पानी से धोकर किसी स्वच्छ कपड़े से पोंछ कर रख लें। दोनों समय भोजन के पश्चात् एक हरड़ को मुंह में रखकर चूस लिया जाय। लगभग आधे से एक घंटे में हरड़ मुंह में घुल जाती है। यह गैस और कब्ज के लिए सर्वश्रेष्ठ औषधि है। इसके साथ ही बाल सफेद नहीं होंगे। दांत जीवन-पर्यंत नीरोगी रहेंगे। पेट के रोग नहीं होते हैं।

1. इससे गैस की शिकायत दूर होती है। शौच खुलकर आता है। पाचन शक्ति बढ़ती है। जिगर के रोग तथा आंतड़ियों की वायु नष्ट होती है, खून साफ होता है। इस कारण चर्म रोग नहीं होते हैं।

2. निरंतर कुछ माह तक सेवन से आंखों के चश्मे का नम्बर भी कम हो जाता है (नेत्र रोगों में हरड़ को भूनकर खूब बारीक पीसकर लेप बनाकर आंखों के चारों ओर लगाने से हर प्रकार का नेत्र रोग दूर हो जाते है)।

3. सिगरेट, बीड़ी पीने की आदत छूट जाती है।

4. यह खुश्की करती है। इसलिए दूध या घी का सेवन करते रहना चाहिए। यदि हरड़ चूस कर सेवन न करे सकें तो 2 काली हरड़ 250 ग्राम पानी में किसी मिट्टी या कांच के बर्तन में भिगो दें और अगले दिन प्रातः सूर्योदय से पहले पी लें। आशातीत लाभ होगा।

अन्य उपयोग

गले के रोगों में हरड़ के क्वाथ में शहद मिलाकर पिलाना चाहिए। खांसी एवं दमा में हरड़ एवं हल्दी के चूर्ण को बराबर मात्रा में मिलाएं एवं थोड़े गर्म पानी के साथ आधा ग्राम लेने से लाभ मिलता है। जिन्हें अपचन रहता है, वे हरड़ के चूर्ण को सौंठ के साथ खाने से पूर्व खायें तो भूख बढ़ती है। सौंठ और गुड़ या सेंधा नमक के साथ खाने से पाचन शक्ति बढ़ती है। वमन में हरड़ का चुर्ण शहद के साथ चाटना चाहिए। हिचकी में हरड़ के चूर्ण एवं अंजीर के चूर्ण को 1/2 माशे गर्म पानी के साथ लेने से लाभ होता है। हर रोज एक छोटी हरड़ भोजन के बाद दांतों तले रखें और इसका रस धीरे-धीरे पेट में जाने दें। जब कॉफी देर बार यह हरड़ बिल्कुल नरम पड़ जाये तो चबा-चबाकर निगल लें। इससे बाल कभी सफेद नहीं होंगे। दांत जीवनपर्यत नीरोगी रहेगें। पेट के रोग नहीं होंगे। पेट ठीक रहेगा तो सम्पूर्ण स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कब्ज व गैस नाश दवा

छोटी काली हरड़ 100 ग्राम देशी घी में भून लें। जब हरड़ फूल जाये और धुँओं निकलने लगे, तब उसे घी से अलग कर लें। उसके बाद 50 ग्राम बड़ी सौंफ लेकर घी में अलग से भून लें। फिर शेष आधी सौंफ कच्ची ही भुनी हुई सौंफ में मिला लें। अब पहले भुनी हरड़ को कूट कर दरदरा चूर्ण बना लें और फिर सौंफ को इस दरदरे चूर्ण में 200 ग्राम देशी घी और 400 ग्राम मिश्री या शक्कर का बूरा मिलाकर किसी कांच के बर्तन में सावधनीपूर्वक रख लें। दवा तैयार है। लेने का तरीका उपर्युक्त चूर्ण में से 10 ग्राम की मात्रा सुबह-शाम गर्म दूध के साथ लें। दो घंटे आगे-पीछे कुछ न खायें। इससे –

– पुरानी से पुरानी कब्ज दूर हो जाती है। कुछ दिनों के नियमित उपयोग से पेट शुद्ध हो जाता है।

– पेट की गैस और आँव मिटती है।

– पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

– यह कब्ज, गैसनाशक होने के साथ बल, वीर्यवर्द्धक रसायन है और नेत्र ज्योतिवर्द्धक है।

– यह सभी ऋतुओं में प्रयोग किया जा सकता है।

– हरड़ की गुठली को पानी के साथ पीसकर लेप करने से माइग्रेन का दर्द कम होता है।

सारांश-हरड़ दांतों से चबाकर खाने से अग्नि बढ़ाती है। पीसकर खाने से मल शोध करती है। पकाई हुई खाने से मल को रोकती है और भुनी हुई खाने से त्रिदोष नष्ट करती है। हरड़ भोजन के साथ सेवन करने से बुद्धि और बल बढ़ाती है।

क्या मुसलमान आतंकवाद के खिलाफ हैं?

-कृष्ण चन्द्र गर्ग, पंचकूला
मो. 09501467456

सीएनएन टीवी चैनल पर उग्रवादी इस्लाम पर बहस के दौरान अमरीकी सुन्नी मुस्लिम महिला रहील रज़ा ने कहा– लगभग हर रोज हमें बताया जाता है कि इस्लामिक आतंवाद का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है पर वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत है। राजनैतिक स्वार्थों के कारण नेता लोग सच नहीं बोल रहे, समस्या से आँखें चुरा रहे हैं और जनता को गुमराह कर रहे हैं।

पहले जानिए इस सम्बन्ध में अमेरिका की दो बड़ी हस्तियों के झूठ को – अमेरिका की पूर्व विदेश सचिव (मन्त्री हिलेरी क्लिंटन – "Muslims are peaceful and tolerant people and having nothing, what so ever to do with rerrorism." अर्थ– मुसलमान शान्तिप्रिय और सहनशील लोग हैं, आतंकवाद से उनका बिल्कुल कोई भी सम्बंध नहीं है।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा – "Al-Qaeda's cause in not Islamic ISIS is not Islamic. The overwhelming majority of Muslims reject hat interpretation of Islam. It is very important for us to allign overselves with 99.9% Muslims who do not support extremism." अर्थ –अलकायदा जो कर रहा है, वह इस्लाम की इस व्याख्या को नहीं मानते। हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है कि हम अपने आप को उन 99.9% मुसलमानों के साथ जोड़ें, जो उग्रवाद के समर्थक नहीं हैं।

अब जानिए सच्चाई क्या है, रहील रज़ा के द्वारा इस समय संसार में लगभग 160 करोड़ मुसलमान हैं और इस्लाम सबसे अधिक तेजी से बढ़ता हुआ मजहब है।

बड़ा भारी नुकसान और बड़ा भारी कत्लेआम करने के लिए थोड़े से आतंकवादी ही काफी हैं, जबकि सिर्फ आईएसआईएस के खतरनाक कातिल जेहादियों की संख्या 40,000 से 2,00,000 तक है। इसके अलावा अलकायदा, हेजबुल्लाह, हमास, बाकोहरम आदि अन्य बहुत से जेहादी संगठनों के लाखों आतंकवादी हैं।

वैज्ञानिक ढंग से किए गए पोल के आधार पर अनुसंधान करने वाले बड़े–बड़े संगठनों ने बारम्बार हमें जो बताया है, वह बहुत परेशान करने वाला है। प्यू रिसर्च ने सन् 2013 में संसार के 39 देशों के हजारों मुसलमानों का सर्वे करने के बाद जो आंकड़े तैयार किए, वे निम्न प्रकार से हैं –

अफगानिस्तान, ईजिप्ट, जॉर्डन आदि कई मुस्लिम देशों में 79% से 83% तक मुसलमान मानते हैं कि जो इस्लाम के मजहब को नहीं मानता, उसका कत्ल कर दिया जाना चाहिए।

सारे संसार में सर्वे के अनुसार 27% अर्थात् 23 करोड़ 70 लाख मुसलमान मानते हैं कि जो इस्लाम के मजहब को नहीं मानता, उसका कत्ल हो जाना चाहिए।

संसार के 38% अर्थात् 34 करोड़ 50 लाख मुसलमान मानते हैं कि जिस स्त्री के शादी से पहले किसी पुरुष से या शादी के बाद किसी गैर पुरुष से शारीरिक सम्बन्ध रहे हों, उसे कत्ल कर देना चाहिए।

पश्चिमी देशों के 18 से 29 वर्ष की आयु के मुसलमान नौजवान, जो मानते हैं कि गैर मुस्लिम लोगों पर आत्मघाती हमले करना जायज है, उसकी संख्या इस प्रकार है–

फ्रांस के मुसलमान नौजवान – 42%
ब्रिटेन के मुसलमान नौजवान – 35%
अमेरिका के मुसलमान नौजवान–26%

मुस्लिम बहुसंख्या वाले देशों में 53% मुसलमान शरीया कानून के पक्ष में हैं। इनमें 52% अर्थात् 28 करोड़ 90 लाख मुसलमान अपराध की स्थिति में कोड़े मारने तथा शरीर का अंग काट देने के पक्ष में हैं और 51% अर्थात् 28 करोड़ 10 लाख मुसलमान अगर औरत बेवफा हो जाए, तो उसे पत्थर मार–मार जान से मार देने के पक्ष में हैं।

नोट– रहील रज़ा "Muslims Facing Tomorrow" नाम की संस्था की अध्यक्ष हैं। वे पिछले बीस वर्षों से आतंकवाद के सम्बन्ध में मुसलमानों की वास्तविक मानसिकता की पोल खोलने का काम कर रही है।

कौन कहता है आज बेटे श्रवण कुमार नहीं होते!!

कौन कहता है? आज बेटे श्रवण कुमार नहीं होते !
बिना बताये मन की बात समझ लेते हैं !!
आपके जीवन में खुशियां बिखेर देते हैं !
दूर रहकर भी आपकी धड़कनों को सुन लेते हैं !!
सूनी आंखों में न जाने कितने रंग भर देते हैं !
आपके सपनों को नई उड़ान देते हैं !!
उनके संवेदनशीलता आदि गुण क्या नेकी में शुमार नहीं होते ?
कौन कहता है? आज बेटे श्रवण कुमार नहीं होते !
व्यस्त क्षणों में भी वे आपकी फिक्र करते हैं !
सुख के पलों, दोस्तों के बीच वे आपका जिक्र करते हैं !!
नहीं भूलते वे आपके साथ बिताये एक–एक पल !
याद आता है उन्हें हर वक्त वो गुजरा हुआ कल !!
बुढ़ापे की लाठी बनने को क्या वे हमेशा तैयार नहीं होते ?
कौन कहता है? आज बेटे श्रवण कुमार नहीं होते !
दूर रहकर भी आपकी पीड़ा का हिसाब रखते हैं !!
आप मानें न माने वे आप से लगाव रखते हैं !
कोई समझे न समझे ! वे तकलीफें भांप लेते हैं !!
आपकी जिन्दगी का वे खुशनुमा लिफाफ होते हैं !
इन अटूट रिश्तों में एक अद्भुत जुड़ाव है !!
मन की सदानीरा पोखर में एक निश्छल बहाव है !!
जीवन की जमा–पूंजी रूपी बेटे कभी बेकार नहीं होते !
कौन कहता है? आज बेटे श्रवण कुमार नहीं होते !

शुद्धि समाचार सम्बन्धी घोषणा

फार्म–4 (नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशन का स्थान	: दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: रामनाथ सहगल
4.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
5.	मुद्रक का पता	: भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भवन, बिरला लाइन, दिल्ली–110007
6.	प्रकाशक का नाम	: रामनाथ सहगल
7.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
8.	प्रकाशक का पता	: भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भवन, बिरला लाइन, दिल्ली–110007
9.	सम्पादक का नाम	: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
	क्या भारत का नागरिक है ?	: हाँ
	सम्पादक का पता	: भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भवन, बिरला लाइन, दिल्ली–110007

उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।

मैं रामनाथ सहगल एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

रामनाथ सहगल
प्रकाशक

दिनांक 01.04.2018

वन्दे मातरम्

(संस्कृत में राष्ट्र गीत के 'वन्दे' शब्द की समीक्षा)

आजकल 'वन्दे मातरम्' गीत पर बहुत विवाह चल रहा है। कुछ समुदाय इसके विरोध में हैं। उनके अनुसार इससे उनकी धार्मिक मान्यताओं से विरोध होता है। वे निराकार ईश्वर / खुदा के अतिरिक्त किसी जड़ वस्तु की / भूमि की उपासना, भक्ति / इबादत नहीं करते। कुछ नास्तिक निरीश्वरवादी किसी ईश्वर को नहीं मानते, न भक्ति/उपासना/इबादत करते हैं। इसी विवाद का विषय बने 'वन्दे' शब्द की हम समीक्षा कर रहे हैं ।

संस्कृत में 'वन्दे' शब्द क्रियापद है, जो 'वदि अभिवादनस्तुत्योः' (=अभिवादन/ प्रणाम करना एवं स्तुति/ गुणगान करना) धातु से लट् लकार (वर्तमान काल) में उत्तम पुरुष के एक वचन में बनता है। वन्द् +शप्+लट् > वन्द् + अ + इट् > वन्दे। इस धातुरूप के इसके धात्वर्थ के अनुसार दो अर्थ हैं –

1. मैं वन्दना (अभिवादन / प्रणाम / भक्ति / उपासना / धोक मारना करता हूँ । यह अर्थ चेतन माता, पिता, आचार्य, गुरु आदि को अभिवादन / नमस्ते करने के लिए एवं परमेश्वर की भक्ति/ उपासना / इबादत करने के लिए प्रयुक्त होता है। तथा –

2. मैं स्तुति / गुणगान / प्रशंसा / नामवरी / बढ़ाई करता हूँ। यह अर्थ चेतन एवं जड़ / निर्जीव पदार्थों / वस्तुओं के प्रति होता है। क्योंकि जड़ वस्तुओं की उपासना / भक्ति / इबादत का तो औचित्य नहीं है। किन्तु प्रशंसा / गुणगान / नामवरी तो चेतन के साथ-साथ जड़ वस्तुओं की भी हो सकती है। जैसेः- प्रत्येक दुकानदार अपनी बेचने की वस्तुओं की प्रशंसा / गुणगान / बढ़ाई करता है। फल-विक्रता कहता है- ये फल ताजे हैं, मीठे हैं आदि। शाक विक्रता कहता है – ये तरकारी ताजा है, बहुत अच्छी है, सस्ती है आदि। मूंग फली वाला जोर-जोर से बोलता है – जाड़े की मेवा मूँगफली, करारी भुनी मूंगफली आदि। टी.वी. रेडियो, अखबारों में दिनरात लोग/ कम्पनियाँ अपने उत्पादों की जोर शोर से वन्दना / प्रशंसा / स्तुति / गुणगान / बढ़ाई करते हैं, जिससे उनका माल अधिक बिकता है। अर्थात् प्रत्येक माल विक्रेता अपनी वस्तुओं की वन्दना / स्तुति / प्रशंसा / बढ़ाई / नामवरी करता है। यदि वह वन्दना/ प्रशंसा / बढ़ाई / गुणगान न करे तो उसका माल धरा रह जाएगा।

यदि कोई विक्रता कहे, कि मैं इन वस्तुओं की स्तुति/प्रशंसा/ गुणगान नहीं करुंगा, तुम्हें चीज लेनी है तो लो नहीं तो आगे बढ़ो, तो दुकान नहीं चल सकती। मैंने प्रत्येक दुकानदार को अपने माल की वन्दना/ प्रशंसा/ स्तुति बढ़ाई करते देखा है। चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो, सिख हो, नास्तिक हो, स्त्री हो या पुरुष हो।

संस्कृत के भारतीय राष्ट्रगीत में भी मातृभूमि की स्तुति / प्रशंसा ही की गयी है –

वन्दे मातरम् ,
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलां मातरम्, वन्दे मातरम् ।
शुभ्रज्योत्स्नां पुलकित-यामिनीम्,
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनी सुमधुरभाषिणीम्, सुखदां
वरदां मातरम् । वन्दे मातरम्.....।

अर्थात् मैं (पृथिवीपुत्र) अपनी मातृभूमि (जन्मभूमि) की वन्दना / गुणगान/ प्रशंसा/ नामवरी करता हूँ, जो सुन्दर मीठे जलवाली, मीठे रसीले फल-फूल-वाली, ठंडी सुगन्धित वायुवाली, हरीभरी फसलों से सजी हुई, चमकीले प्रकाशवाली, शान्तिप्रद रात्रियों वाली है, यह फूलते फलते वृक्षों से सुशोभित है, यहाँ के वासी हंसते खेलते मधुरभाषी हैं। यह मेरी मातृभूमि सुख देने वाली और वरदान देने वाली (लक्ष्य को पाने की शक्ति देने वाली) है। ऐसी अद्भुत मातृभूमि की मैं वन्दना / प्रशंसा / गुणगान / नामवरी करता हूँ ।

इस गीत में गुणगान / प्रशंसा करने वाले ही शब्द हैं। धोक मारने / उपासना / इबादत करने को नहीं कहा गया। जिस देश की मिट्टी से हम पले-बढ़े हैं, उसकी प्रशंसा करना/ गुणगान करना तो हमारा स्वाभाविक धर्म है, अन्यथा कृतघ्नता, ऐहसान फरामोशी का पाप लगेगा ।

मैं यह व्याख्या अपनी मनमानी खींचातानी से नहीं कर रहा हूँ, अपितु हजारों लाखों वर्षों से उक्त दोनों अर्थों में यह धातु है, जिससे 'वन्दना' (अभिवादन / प्रणाम और स्तुति / प्रशंसा) शब्द बनता है। इसके जो अर्थ हजारों वर्ष पूर्व थे, वही अब हैं और ये ही दोनों अर्थ वर्षों के बाद भी रहेंगे।

'वन्दे मातरम्' पर आपत्ति का कारण मैं समझता हूँ, कि वे 'वन्दे' शब्द का एकमात्र अर्थ अभिवादन करना/ इबादत करना ही समझते हैं, जो कि इस शब्द के प्रति घोर अन्याय है और 50% झूठ है। इस 'वन्दे' शब्द का अर्थ 'अभिवादन' भी है, किन्तु 'अभिवादन' ही नहीं, अपितु 'स्तुति करना' (प्रशंसा करना, गुणगान करना) भी है। वही दूसरा अर्थ इस गीत में लेना अभीष्ट है।

अतः मेरा निवेदन है, कि सभी लोग अपने देश की प्रशंसा करने वाले गीत को मातृभूमि की स्तुति/ प्रशंसा / गुणगान / नामवरी करने वाला मानकर निःसंकोच प्रसन्नता से गावें।

अन्य क्षेत्रिय भाषाओं में तो एक शब्द के अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं, जैसे-मराठी भाषा में 'ताई' का अर्थ है – दीदी (बड़ी बहिन) किन्तु हिन्दी भाषा में 'ताई' का अर्थ ताऊ की पत्नी / माँ की जेठानी होता है। अतः यदि आप उत्तर -प्रदेश में 'दीदी' को 'ताई' कहकर बुलाएँगे तो नाराज होगी, थप्पड़ देगी या गाली देगी। किन्तु यदि महाराष्ट्र में दीदी को 'ताई' कहकर बुलाएँगे तो वह प्रसन्नता से उत्तर देगी। किन्तु संस्कृत-भाषा में ऐसी भ्रान्ति नहीं होती। स्थिति के अनुसार उसका अर्थ स्पष्ट हो जाता है।

यदि आप इस राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकृत 'वन्दे मातरम्' के पदसमूह को देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि इस गीत में भारत का नाम नहीं है अतः इसे पाकिस्तान, चीन, जापान, अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि के सभी देश गा सकते हैं। अर्थात् यह किसी एक देश (भारत) का ही गीत नहीं अपितु पृथिवी-वासी प्रत्येक देशवाले को गाने योग्य है। मेरा मान्य प्रधानमंत्री श्री मोदी जी से निवेदन है, कि इस 'वन्दे मातरम्' गीत को संयुक्त राष्ट्र संघ में 'विश्वराष्ट्रगीत' की मान्यता दिलाने के लिए प्रयत्न करें क्योंकि हम सब पृथ्वीवासी एक – कुटुम्ब हैं (वसुधैव कुटुम्बकम्) । यदि आगे कभी हमें मंगलग्रह वासियों या बृहस्पति ग्रह वासियों के साथ मिलने का अवसर मिले तो हम गर्व से कह सकें कि हम ऐसी पृथिवी (ग्रह) के वासी हैं, जैसी इस गीत में बताई गयी है।

इस गीत के शीर्षक के 'मातरम्' शब्द पर भी विवाद है, कि हम भूमि को 'मातरम्' क्यों कहें? सो इसका अर्थ समझे कि यह शब्द वाचकलुप्तोपमालंकार में है, अर्थात् माता के समान सुख देनेवाली/ जीवन देने वाली भूमि 'मातृभूमि' ।

इसी सादृश्य से बहुत से शब्द बोले जाते हैं। जैसे- 'नरशार्दूलः' रामसिंह, रणसिंह, धर्मसिह, गोविन्दसिंह आदि। सिख बन्धुओं के नाम अधिकतर सिंह परक होते हैं । इन सबका अर्थ है, सिंह / शेर के समान पराक्रमी -उत्साही। न कि बड़े-बड़े दांतों और पंजों वाला जानवर ।

आशा है, कि सभी मत के लोग सभी देशों के मनुष्य इस 'वन्दे मातरम्' गीत को खुशी-खुशी से गा गाकर स्वयं भी प्रफुल्लित होंगे।

– आचार्य आनन्दप्रकाश
दूरभाष : 9989395033

हार्दिक शुभकामनाएँ

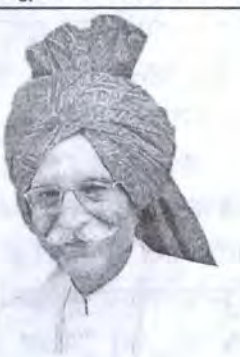

आर्य नेता, कर्मठ समाज सेवी, महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त, सफल व्यवसायी, कर्मयोगी, दानवीर भामाशाह, करुणा की प्रतिमूर्ति, सेवा को अपने जीवन का आदर्श समझ कर **इद्न्न मम्** की भावना को अपने जीवन का आधार बनाने वाले हम सबके प्रेरक, समाजोत्थान के लिए कार्यरत, अनेक संस्थाओं के जनक तथा पूर्तिदाता, गौभक्त, वेद भक्त, यज्ञीय भावना के धनी, चिर युवा **महाशय धर्मपाल जी के 95वें जन्मदिवस** पर शुद्धि सभा एवं शुद्धि समाचार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

बाल संसार

–स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आज भी मौसम सुहावना था। यद्यपि शीत ऋतु का प्रभाव कम हो गया है परन्तु अभी गर्मी आई नहीं है, अतः जिज्ञासु श्रद्धालु सज्जन और युवक अच्छी संख्या में सत्संग में स्वामी चैतन्य मुनि जी के उपदेश सुनने पंहुच गए थे। यवुक देवसुमन भी ठीक समय पर स्वमी चैतन्य मुनि जी को बुलाकर ले आया था। स्वामी जी के पधारते ही सभी युवकों ने खड़े होकर स्वामी जी का चरण स्पर्श पूर्वक अभिवादन किया। तथा स्वामी जी के आदेश पर सभी अपने–अपने स्थान पर बैठ गए।

सभी युवकों के बैठने पर युवक देवसुमन ने करबद्ध प्रार्थना करते हुए कहा स्वामी जी पीछले उपदेश में आपने व्यायाम के विषय में बतलया था। आज आप आहार या भोजन के विषय में हमें कुछ उपदेश देने की कृपा करें।

स्वामी चैतन्य मुनि :– भोजन तीन प्रकार का होता है (1) सात्विक जो भोजन अहिंसा धर्मादि शुभकर्मों से प्राप्त कर खाया जाता है वह भक्ष्य है। तथा जिन पदार्थों से स्वास्थ्य अच्छा रहे रोगों का नाश हो एवं बुद्धि बल पराक्रम आयु की वृद्धि हो उन चावल, गेहूं, मुंग, चना, आदि की दाल, दूध, घी, गाजर, मूली आदि कन्द, आम, केला आदि फल इन द्रव्यों का आयुर्वेदिक विधि से प्रयोग किया जाए इनको सात्विक विधि से भोजन पका के या कच्चा उस भोजन पका के या कच्चा उस भोजन को खाने से शरीर निरोग रहता है। किसी प्रकार का रोग नहीं होता एवं आयु की वृद्धि होती है। अतः जो युवक निरोग रहकर लम्बी आयु जीना चाहता है उसे सात्विक भोजन करना चाहिए। कुछ फल कच्चे खाए जाते है तथा कुछ पके खाए जाते हैं। इस प्रकार कुछ कन्द भी कच्चे, पके खाए जाते है। कन्द में मूली, गाजर आदि सात्विक माने जाते है, इससे स्वास्थ अच्छा रहता है चर्बी बढती है। आलु को प्रायः अनेक प्रकार के व्ययञ्यन मे डालते है। आलु का उपयोग सभी देशों में अलग–अलग ढंग से किया जाता है परन्तु गाजर मूली, व्यज कच्चे पके दोनों में खाए जाते है। प्याज धातु वर्धक एवं कफ कारक है। प्याज के रस के साथ शहद मिलाने से धातु की वृद्धि होती है। गर्मी में यात्रा करते समय यदि प्याज जेब में रखलिया जाए तो या प्याज का आधा टुकडा शिर में बांध लिया जाए तो लू नहीं लगती। जिस किसी व्यक्ति को अचानक सापं काट दे परन्तु उस समय कोई चिकित्सा का साधन न हो तो प्याज का रस दो–तीन बार पिला देने से सांप का विष नष्ट हो जाता है। इस प्रकार लहशुन भी अनेक प्रकार के रोगों में उपयोग है। परन्तु युवक को प्याज, लहशुन आदि उत्तेजित पदार्थो का दवाई के रूप में ही उपयोग करना चाहिए। क्योंकि ये दोनों ही अत्यन्त उत्तेजित है। युवक स्वस्थ में शरीर वैसे ही वीर्य से भरा रहता है। वीर्य के कारण ही यवुक उछल कूद अधिक करता है तथा शारीरिक श्रम अधिक से अधिक कर पाता है अतः युवक को युवावस्था में वीर्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। जिस युवक में जितना अधिक वीर्य रहेगा वह उतना अधिक स्वस्थ एवं निरोग रहेगा। अतः आप लोगों को इस बढ़ती युवावस्था में पुरी सावधानी पूर्वक अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा करना चाहिए। इससे भविष्य में भी सदा तुम निरोग रहोगे और लम्बी आयु प्राप्त होगी, अतः मेरा सभी युवकों से आग्रह है कि पूर्ण सावधानी पूर्वक अपनी जवानी को संभाले तथा सावधानी पूर्वक वीर्य की रक्षा करें।

भ्रष्टाचार

रिश्वत लेते पकड़ा गया, रिश्वत दे जाए छूट।
क्या है यह होश्यारी, या लूट में लूट ।।

सुनते थे पहले नाम गिरधर गोपाल,
अब ज़रुरी हो गया है लोक पाल,
झूठ बोल कर काम चलाए जो मकार ।
आज उसी की हो रही है जय जय कार ।।

पत्रियां मिलाने, पत्रियां नई बनवाना विवाह में है भ्रष्टाचार,
दहेज वह भी मांग कर लेना, परिवारों में भ्रष्टाचार,
तीन वर्ष की बलिका, 70 वर्ष का बूढ़िया से बलातकार ।
यह कैसी कारीगरी, गुनाह भी और भ्रष्टाचार ।।

हरीशचन्द्र से मुरदे जलवाना, सत्य युग का था भ्रष्टाचार,
लक्ष्मण रेखा पार कर सीता उठा ले जाना त्रेता का था भ्रष्टाचार,
द्रोपदी को नगन का डायतन, द्वापर युग का भ्रष्टाचार।
आश्रमों में महिलाएं रखना, कलयुग का है भ्रष्टाचार ।।

नौ सौ चूहे खा के बिल्ली हज को चली, यह भी तो है भ्रष्टाचार ,
शाकाहारी पशुओं को मार के खाना, आहार का है भ्रष्टाचार,
पूरा वेतन ले बच्चे न पढ़ाना, अध्यापक का भ्रष्टाचार ।
टेब्ल के नीचे हाथ फैलाना कर्मचारी का भ्रष्टाचार ।।

न्यायालयों में शीघ्र निर्णय न देना, इसका कारण भ्रष्टाचार,
सारी दुनिया में भ्रष्टाचार बताना, भ्रष्टाचार का भ्रष्टाचार,
टेस्ट पर टेस्ट कराते जाना, स्वास्थ्य का भ्रष्टाचार!
ऐसे लगता सर्वव्यापक दोनों ईश्वर और भ्रष्टाचार।।

दवाई में मिलावट, दूध घी में मिलावट है भ्रष्टाचार ,
हरयाली कम करते जाना, प्रकृति से भ्रष्टाचार,
नदियों में गंदगी डालना, गंगा यमुना से भ्रष्टाचार।
उपनी कमी दूसरे पर मड़ना, अपने आप से भ्रष्टाचार।।

मुंह पर प्रशंसा, पीछे निन्दा, आचार का भ्रष्टाचार,
आये महमान की बे–ईज्जती करना, व्यवहार का भ्रष्टाचार,
गन्ने अंगूर से शराब निकाला, फलों से भ्रष्टाचार।
नोट दे कर वोट है लेना, राजनीति में भ्रष्टाचार ।।

भ्रष्टाचार मिटाना है वो गीता सब को पढ़ानी पड़ेगी।
बुद्ध, नानक, हनुमान की जीवनी बतानी पड़गी।
सिकंदर की अर्थी से बाहर दोने हाथ खाली।
मन भी साफ, तन भी साफ, इस की महिमा सुनानी पड़गी ।।

–हरबंसलाल कोहली, संरक्षक

अंधविश्वास और हम

21वीं सदी में जो अन्धविश्वास समाप्त होना चाहिए था वह 17वीं शताब्दी से भी ज्यादा परिपक्कता के साथ अपनी जड़े जमा रहा हैं। आज के वैज्ञानिक युग में भी हम पुराकाल के अन्धविश्वासी विचार रखते हैं। सच तो यह हैं कि हम उस में से कभी निकल ही न पाए न ही निकालने का प्रयास किया गया। प्राचीन मान्यताओं धारणाओं को ज्यो का त्यों निर्वहन किए जा रहे हैं, बिना उन के उद्गम कारण व तथ्यो पर विचार किए। शिक्षा व ज्ञान के अभाव ने अन्धविश्वास को जन्म दिया जो आज शिक्षा, ज्ञान व विज्ञान के होते हुए भी जस का तस हैं। अंधविश्वास की कोई लिखित संहिता नही हैं न ही उसका पालन करना आवश्यक होता है यह प्रचलित पारम्परिक विचार मत हैं जो हमें अपने समाज, परिवार और पूर्वजों से एक कर्ज के रूप में प्राप्त होते हैं जिस की (ईएमआई) जीवन भर चुकाते रहते हैं। व्यक्ति परिस्थितयों पर नियन्त्रण अथवा निश्चिय परिणाम की प्राप्ति के लिए अन्धविश्वास का सहारा लेते हैं। असल में हम दोहरे व्यक्तित्व का जीवन जीते हैं एक ओर ईश्वर की प्रभुसत्ता को स्वीकार कर स्वयं को उसी के मार्ग पर चलने की इजाजत देते हैं तो दूसरी ओर उसी के मार्ग विमुख होकर अन्धविश्वास का सहारा लेते है। उदाहरण के लिए गीता में बताए कर्म के मार्ग की वकालत करेंगे तो दूसरी ओर उस कर्म के परिणाम को निश्चित करने के (अपनी चाहत के अनुरूप) किए कर्म का त्याग टोटके का सहारा लेंगे अथवा अन्तरिक्ष की ओर टकटकी लगाए रहेंगे। सरल अर्थ में कहे तो एक अच्छा डॉक्टर वकिल वैज्ञानिक बनने के लिए जिस परिश्रम की आवश्यकता होती है वह न करके अन्तरिक्ष से आने वाले उसके परिणाम को किसी टोटके से सुनिश्चित करने में लगे रहते हैं। क्या कर्म का परिणाम अन्तरिक्ष से आता है वह भी ऐसा कर्म जो किया ही नही गया हो यदि आता है तो कैसे और कौन से माध्यम से हम तक पहुँचता हैं। पूर्वजों के अन्धविश्वास रूपी कर्ज के चलते आज हमारी युवा पीढ़ी परिश्रम कर भविष्य को सुनिश्चित करने की बजाय दूर अन्तरिक्ष में सिति निर्जीव ग्रह व तारों भविष्य निर्माण की आस लिए ज्योतिषियों के दरबार में पालथी लगाए बैठी हैं उनकी यही कर्महीनता भाग्यहीनता में परिवर्तित होकर उनके नही वरन समाज के समक्ष खड़ी है। इसलिए आज बुद्धिजीवी वर्ग का इस पर चिन्तित होना लाजमी है। " जो युवा समाज को एक नई राह दिखा सकते हैं वे स्वयं ही अन्धविश्वास के गर्त में बैठे हुए अपने ही पतन की कहानी लिख रहे हैं।" शिक्षा नौकरी व्यवसाय परिवार सन्तान धन संपत्ति स्वास्थ्य आदि विषयों को प्रभावित करने वाले तत्व सुदुर अन्तरिक्ष में स्थित न होकर यही पृथ्वी पर सामाजिक परिवेश आर्थिक पारिवारिक व्यक्गित राजनैतिक भौगोलिक विषमता जलवायु आदि अनेक रूप में विद्यमान हैं जिनमें से कुछ पर व्यक्ति का नियन्त्रण कुछ पर नही। जिसके कारण व्यक्ति अपने जीवन में घटने वाली बहुत सी घटनाओं को नियन्त्रित कर पाते हैं जिन्हे नहीं कर पाते हैं उसके लिए फिर वही आकाश की ओर गैस के गेंदे की तरफ उनसे आने वाले किसी अदृश्य प्रभाव को पकड़ने के लिए.

आत्मविश्वास मनुष्य की अदृश्य और कर्म सदृश्य शक्ति हैं। आत्मविश्वास अदृश्य इसलिए क्योंकि व्यक्ति कभी इसे सदृश्य रूप में साकार करते ही नहीं हैं। जब कर्म ही आत्मविश्वास के साथ किया जाएगा तो परिणाम अनिश्चित ही रहेगा। जब व्यक्ति यही नही जानते कि जो कर्म किया जा रहा है, वह सही दिशा में हो रहा है अथवा नही तो ऐसे में किसी निश्चित परिणाम की अपेक्षा कैसे कि जा सकती है? कर्महीन व्यक्ति परिश्रम की महत्ती को नकारते हुए यह तर्क देने नजर आते हैं की यदि परिश्रम ही सब कुछ होता तो एक मजदूर जो सबसे अधिक परिश्रम करता है वह सबसे अमीर होता है।

– सत्यार्थ सौरभ से साभार

सभी समस्या का समाधान है एकेश्वरवाद

– डॉ. दयानिधिसेवार्थी
9971787837

आज यदि हम घर से बाहर निकले तो अपने दोनों ओर नज़र दौड़ा कर देखें तो अनेकों मत मतान्तरों, सम्प्रदायों के दुकान जिसको मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, चर्च के रूप में जाना जाता है। सोमवार को एक पत्थर को दूध चढ़ा कर अपने को धन्य मानने वालों की लम्बी पंक्तियाँ लगी होती है शिव मन्दिर के बाहर, मंगलवार को हाथ में लड्डू लेकर हनुमान् जी के मन्दिर के बाहर, बुधवार को गणेश मन्दिर, गुरुवार को पीर बाबा, साई बाबा के मन्दिर के बाहर तो शुक्रवार को रोड़ों पर नमाज़ की भीड़ तो शनिवार को शनिमन्दिर के बाहर लम्बी पंक्ति तो रविवार को सूर्य मन्दिर क बाहर भीड़ होती है। हम यही नहीं रूके आगे कोई राम रहिम के आश्रम तो कोई निरमल दरबार में माथा टेकने जाता है। यदि हम कहीं जाते नहीं है तो घर पर ही अखबारों में समाचार के चैनलों पर भाग्य फल, गुड लक गुरु, फैमिली गुरु, इन सभी अंधविश्वासों के पीछे एक ही कारक है हमारा आत्म बल कम होना और अन्दर का डर जो हमें इन सभी जंजालों में फसाता है यदि ऐसा नहीं है तो यह कारण तो 100: निश्चित है कि हम सरलता के रास्ते चल पड़े है हम मेहनत से पीछे हटते जा रहे है सब कुछ हमने भगवान्, अल्लाह, वाहिगुरु, ईशू, पीर बाबा, साई बाबा, तथा अनेक पाखण्डियों के भरोसे छोड़ कर बैठ चुके है और जब हमें यह सब दिखता है तो हम निराश होते है दूर न देखे आर्य समाज आन्दोलन से सम्प्रदाय बन चुका है मन्दिर शब्द हमने लगा दिया और हम भी उन्हीं लोगों की पंक्तियों में जा कर खड़े हो गए है जहां सभी लोग आज खड़े है। आज यह विषय सामने आया 'एकेश्वर वाद' यह क्या है? क्यू आवश्यकता पड़ी दयानन्द की इस सिद्धान्त को लाने की? आखिर क्यों प्रतिनिधि सभा ने इस विषय को दिया कि आचार्य जी समझाओं? हमें सोचना है समझना है।

सर्व प्रथम तो कि यदि इस विषय को समझ कर ही हम रह गए तो हमने इस विषय को अनेको बार समझ चूके है। "समझ समझ कर जो ना समझे वो सबसे बड़ा ना समझ है।" और यह इस व्याख्यान के बाद भी होगा। यदि नहीं होगा तो मेरा समझाना और इस ओर कदम बढ़ाना सार्थक होगा। यहां सभी से चर्चा करते हुए आए हम इस विषय को समझे – यह सर्वप्रथम तो मन से निकाल दे कि यह सिद्धान्त दयानन्द जी ने या किसी आर्य समाजी विद्वान् या सज्जन ने प्रतिपादित किया है। यह सिद्धान्त सनातन है और सभी समस्या को समाप्त करने का नियम है।

शब्द में दो पद है एक + ईश्वर जहां एक ही शक्ति की बात की जाए वह विचार 'एकेश्वर वाद' होता है। जैसे एक व्यक्ति के शरीर में अनेको यन्त्र है परन्तु निर्णय एक बुद्धि करती है तथा एक ऐसी शक्ति करती है जिसे प्राण या आत्मा भी माना जाता है। एक परिवार में सदस्य चाहे कितने हो परन्तु मालिक मुखिया एक ही होता है। एक गांव में चाहे जितने भी परिवार हो परन्तु एक ऐसी संगठन जिसे पंचायत कहते है वह प्रमुख होती है। राज्य में जितने भी प्रतिनिधि मंत्री हो परन्तु सर्वप्रमुख एक ही मुख्य मंत्री होता है, देश में जितने भी मुख्य मंत्री क्यों न हो परन्तु प्रधान मंत्री एक ही होता है। पूरे राष्ट्र में एक ही राष्ट्रपति होता है पूर विश्व में एक ही राष्ट्राध्यक्ष होता है यहां तक कि किसी भी सभा का छोटे से छोटे बड़े से बड़े सभा का एक ही सभा पति होता है और सरल करे तो दो समूह खिलाड़ीयों का खेलता है परन्तु उस समूह का नेतृत्व करने वाला भी एक ही होता है, सेना चाहे कितनी विशाल हो परन्तु सेनापति एक ही होता है।

यह बात जब प्रत्यक्ष दिखता है और प्रत्येक व्यक्ति इस बात को मानता है तो फिर इसी बात को हम वेद के मन्त्रों के रूप में कहते है तो लोग क्यों इसे आर्य समाज का सिद्धान्त कह कर अपने को दूर कर लेते है। हमें ध्यान देना होगा इस यजुर्वेद के शुक्ल शाखा के मध्यान्धिन संहिता के 23वें अध्याय के 19वें मन्त्र की ओर जो हमारे इस एक ईश्वर की ही बात आज से हजारों वर्ष पहले कहता है –

"गणानां त्वा गणपतिं हवामहे,
प्रियाणां त्वा प्रियपति"
हवामहे, निधीनां त्वा निधिपतिं
हवामहे....।।" शुक्ल यजुवेद (23/19)

सभी समूहों के स्वामी की स्तूति करे, जो सभी प्रियों में प्रिय है उसकी स्तूति करे, जो सभी सम्पन्नों में सबसे सम्पन्न है उस की स्तूति करें।

यह मन्त्र उसी बात को दर्शाता है जिस बात को हम लोग व्यवस्था के रूप में अपना रहे है। अपने जीवन में हम जिस व्यवस्था को जी रहे है। परन्तु यह ध्यान रखना होगा यदि 'एक पद' का सिद्धान्त जिस दिन, जिस पल, जिस क्षण समाप्त हो जाएगा उसी दिन, उसी पल उस व्यक्ति का, उस परिवार का, उस गांव का, उस राज्य का, उस देश का, उस राष्ट्र का हर तरह से विनाश हो जाएगा। और यह विनाश प्रारम्भ हो चुका है। आध्यात्मिक रूप से हम विनष्ट हो चुके है, हम आत्मिक रूप से भी विनष्ट हो चुके है। इसका मूल कारण है 'एकेश्वरवाद' के सिद्धान्त का त्याग कर के अपने को विनाश के रास्ते पर

.....

हम ने शरीर में स्थित आत्मा की न मान कर इन्द्रियों की बात मानना प्रारम्भ किया शरीर से विनाश रोगों ने, तनाव, चिन्ता, आत्महीनता, छल, कपट, द्वेष, ईर्श्या सब ने आक्रमण कर दिया हमारा शारीरिक विनाश हो चुका है इसका एक यही कारण है 'एक ईश्वर' को न मानना यहां ईश्वर मालिक आत्मा को न मानना ही विनाश का कारण बना।

हमने अपने परिवार में प्रमुख मुखियां मालिक अपने बड़ों को नहीं बनाया और उनके अनुभवों को नहीं माना तो आज हमारा परिवार विनष्ट हो चुका है कलह , नीन्दा, छल, कपट, अपसी इन्द्व ने अपना स्थान बना लिया और परिवार का आज विनाश हो चुका है। इसके पीछे भी एक यही कारण है। परिवार की मुखियां एक शक्ति को हमने छोड़ दिया और विनाश हो चुका।

हमने समाज को विनष्ट कर दिया अपने समाज के मुखिया धार्मिक व्यक्ति, उपदेशक, आचार्यों की बात मानना छोड़ दिया जिससे चहूं ओर भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार अनैक्तिकता ने अपना डेरा डाला और समाज में चहुं ओर विनाश का ताण्डव मचा हुआ है।

मैं यह नहीं कहता कि इन्द्रियों में क्षमता नहीं है शरीर के बचाने की, मैं यह नहीं कहता कि परिवार के सभी सदस्य कमजोर है निर्णय लेने में, मैं यह भी नहीं कहता कि समाज मे सभी के विचार बूरे है सभी गलत परन्तु जिसके पास दृढ़ भूमि है जिसके पास नेतृत्व क्षमता है उसे आगे करें उस बिखरे हुए को एक रूपता प्रदान करें जिसको हम अधिकार दे कि वह सभी शक्तियों में सामंजस्य बैठा कर कार्य करें नेतृत्व करें और यही नेतृत्व एक के हाथ में होगा तो हर तरफ बिज होगा शरीर भी स्वस्थ होगा, परिवार भी सही होगा, समाज भी यही होगा यह 'एक ईश्वर' वाद कोई नया विषय नहीं है इसी जिसको हम जीते आए है वह विषय है इसी को हम आध्यात्मिक रूप से भी समझ ले कि संसार को चलाने के लिए अनेकों शक्तियों की आवश्यकता है। ऊर्जा के लिए सूर्य शक्ति के लिए वायु, ठहराव के लिए पृथ्वी, व्यापकता आधार के लिए आकाश, तरलता के लिए जल अनेक ग्रहों के लिए सूर्य है तो अनेक औषधियों के लिए चन्द्र है। इस तरह से अनेकों शक्तियाँ हैं ब्रह्माण्ड में परन्तु इस सभी का नेतृत्व करने वाली परम शक्ति तो एक है जो सम्पूर्ण शक्तियों का नियन्त्रण करती है ।

"एकः सद् विप्रा बहुधा वदन्ति"
(ऋ. 1/164/66)

अनेकों शक्तियां है जिसके बारे में कहा गया परन्तु वह परम शक्ति एक ही है।

''अपि पन्थागमन्महि स्वस्तिगामनेहसम्।
येन विश्वा परि द्विषो तृणक्ति विन्दते वसु।। (ऋ. 6/51/16)

सभी को ठीक ठीक से सुख प्राप्त कराने वाला, न्यायकारी एक ही वह नेता है।

"मा चिदन्यद् वि शंसत् सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरूक्था च शंसत ।। (ऋ. 8/1/1)

अनेकों की स्तुति में खुद को मत फसाओं एक की ही स्तुति करो वहीं एक चेतना है जिससे सभी चेतनत्व प्राप्त करते है।

"य एक इद्व्यश्चर्षणीनामिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः।
मः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान् त्सत्यः सत्वा पुरुभायः सहस्वान् ।।
(ऋ. 6/22/1)

वह एक ही है जिसकी सभी अपनी पवित्र वाणी से स्तूति कर अपने

को धन्य बनाए।

यह सभी प्रमाण है जो कहते है कि हर तरह से हमें एकत्व की ओर ध्यान देना चाहिए। संगठित रूप से एक ही शक्ति है जिससे सम्पूर्ण संसार अपने को जोड़ कर चलता है। हम अपने आप को भ्रम में न फसाए एकांत में बैठ कर अपनी आत्मा, की अवाज को पहचान कर उस परम शक्ति को जानने का प्रयास करें। वह– सच्चिदान्द रूप, निराकार, अनादि, अजन्मा, अभय, नित्य, पवित्र, शुद्ध है।

हमें यह ध्यान रखना है उसके कान नहीं है फिर हम ऊची–ऊची ध्वानियों के माध्यम से हम उसे सुना कैसे सकते है। उसको दिखा भी नहीं सकते, उसको खिला भी नहीं सकते, उसको मना भी नहीं सकते, उससे रूठ भी नहीं सकते, वह मेरा नहीं वह तेरा नहीं वह है बस इतना ही जान कर व्यवहार करे।

वह क्या है कैसा है कहां है क्या करता है इन सभी प्रश्नों को तो बड़े बड़े तपस्वी नहीं जान सके तो हममें वह शक्ति कहां। बस वह एक ही हो सकता है तभी यह संसार ब्रह्माण्ड चल रहा है। अतः वह 'एक ईश्वर' है इस विचार को मान कर, समझ कर, व्यवहार में उतारेगें तभी इस सिद्धान्त का सही मायने में अर्थ हो पाएगा नहीं तो यह विचार सृष्टि के आदि से चले आ रहे है और आज भी है। मानेगें तो अभी भी विनाश से ऊपर उठना प्रारम्भ कर सकते है।

प्रवेश सूचना

श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुल आश्रम (बृजघाट) का 2018–2019 का बालक और बालिकाओं का शैक्षणिक सत्र प्रारम्भ है। पञ्चम, षष्ठ, सप्तम और अष्ठम क्षेणी में प्रवेश परीक्षा हेतु 10 अप्रैल से 15 अप्रैल के मध्य आकर प्रवेश सुनिश्चित करें। गुरुकुल में शिक्षा–आवास–भोजन पूर्णतः निःशुल्क है। आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों के बच्चों को प्राथमिकता दी जायेगी। सम्पर्क करें।

आचार्य विकाश तिवारी
साधना आश्रम, बृजघाट
गढ़मुक्तेश्वर, जिला हापुड़
चलभाष 9968059239

गुरुमाता–उषा देवी जी
श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुल आश्रम (कन्या)
352, राम कुटीर, बृजघाट,
चलभाष : 9627143780

प्रवेश प्रारम्भ

वैदिक गुरुकुल गढ़ मीरकपुर मेरठ रोड़, सोनीपत हरियाणा में नए सत्र से प्रवेश 1 अप्रैल 2018 से आरम्भ हो रहे है कक्षा 6 में प्रवेश परीक्षा पास करने पर लिया जायेगा गुरुकुल में भोजन, आवास शिक्षा पूर्णतया निःशुल्क है।

संम्पर्क सूत्र – पं. धूमसिंह शास्त्री, संचालक, चलभाष : 9891142673, 9968242876

गुरुकुल का द्वितीय वार्षिकोतस्व

वैदिक गुरुकुल गढ़ मीरकपुर मेरठ रोड़ सोनीपत का द्वितीय वार्षिकोत्सव दिनांक 18 अप्रैल 2018 प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक सम्पन्न होगा। आप सादर आमंत्रित हैं।

– पं. धूमसिंह शास्त्री, संचालक, चलभाष : 9891142673, 9968242876

गुरुकुल खेडाखुर्द दिल्ली का उत्सव

गुरुकुल खेडाखुर्द दिल्ली – 110082 का वार्षिकोत्सव रविवार, 8 अप्रैल 2018 को प्रातः 8 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक सोल्लास मनाया जायेगा। इससे पूर्व 29 मार्च से 7 अप्रैल 2018 तक प्रातः 7 से 9 व सायं 5 से 7 बजे तक यज्ञ होगा। आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। –ब्रह्मप्रकाश मान, प्रधान – मनोज मान, मन्त्री –आचार्य सुधांसु, प्राचार्य

प्रवेश प्रारंभ

आपको अत्यंत हर्ष होगा कि युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती के गुरुवर प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानंद सरस्वती की स्मृति में गुरु विरजानंद गुरुकुल इन्दौर मध्यप्रदेश में छात्रों का प्रवेश प्रारंभ हो चुका है।

अधिष्ठाता
गुरु विरजानंद गुरुकुल, इन्दौर
मो. 9977987777, 9977957777

आचार्य
गुरु विरजानंद गु., इन्दौर
मो. 9202213410, 9467677589

भूल सुधार

शुद्धि समाचार के मार्च 2018 अंक में ''हार्दिक आभार'' कालम में आर्य समाज लोधी रोड जोरबाग के मंत्री का नाम श्री अतुल अरोड़ा के स्थान पर श्री अतुल ग्रोवर छप गया था त्रुटि के लिये खेद है।

-संपादक

माह मार्च 2018 के आर्थिक सहयोगी

आर्य समाज सी–3, जनकपुरी, नई दिल्ली (एक प्रचारक का एक वर्ष का व्यय)		30,000/–
अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवासंघ, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली (छः माह की सहायता)		7200/–
श्री जगदीश सरला ट्रस्ट ग्रीन पार्क, नई दिल्ली		5000/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के. पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बंगलौर	मासिक	700/–
श्री शिव कुमार मदान जी, ट्रस्टी, जनकपुरी नई दिल्ली	मासिक	700/–
श्री चतर सिंह नागर, महामंत्री भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, दिल्ली		500/–
श्रीमती वेद वती आर्या 'स्नेही' नारायण गढ़, अम्बाला, हरियाणा		500/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	मासिक	100/–
श्रीमती राज सेठी जी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	50/–

श्रीमती सावित्री शर्मा जी राजेन्दर नगर, द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती उमा बजाज जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1000/–
श्रीमती सरोज सहगल जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1000/–
श्री भीष्म लाल जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	800/–
श्रीमती प्रमिला घई जी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	600/–
सुश्री वेदमदान जी, डब्ल स्टोरी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/–
श्री राजेश चौपड़ा जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	300/–
श्रीमती सुदर्शन ग्रोवर जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	300/–
श्रीमती सुमन चावला जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती वीना बजाज जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती कृष्णा त्यागी जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती रेनू जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–

हार्दिक आभार

आर्य समाज सी–3 ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली के प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी ने शुद्धि सभा की ओर से मेरी प्रार्थना पर एक प्रचारक के मासिक व्यय 2500/– प्रतिमाह प्रदान करने की मेरी प्रार्थना पर उन्होंने अपनी आर्य समाज की ओर से एक प्रचारक का एक वर्ष का व्यय रु. 30,000/– की राशि आर्य समाज सी–3, जनकपुरी नई दिल्ली की ओर से दान स्वरूप प्रदान की गई है इसके लिये मैं आर्य समाज के प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी, मंत्री श्री रमेश आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री भूपसिंह सैनी जी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ शुद्धि कार्य को बढ़ाने के लिये आर्य समाज सी–3, जनकपुरी जो पश्चिमी दिल्ली की प्रसिद्ध आर्य समाज है की ओर से भविष्य में भी आर्थिक सहयोग शुद्धि सभा को प्राप्त होता रहेगा।

श्री मदान जी, जो शुद्धि सभा ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं ने अपनी व्यक्तिगत दान राशि में भी 500–/ प्रतिमाह की भी वृद्धि कर दी है। इसके लिए श्री मदान जी का जितना भी धन्यवाद किया जाये कम है। – चतर सिंह नागर, महामंत्री

नव वर्ष-विक्रमी सम्वत् 2075 के अवसर पर सर्व कल्याण महायज्ञ

नई दिल्ली, ईश्वरीय वरदान संस्थान की ओर से गाँव करावला में स्वदेशी नववर्ष (विक्रमी सम्वत) 2075 के उपलक्ष में आज (दिनांक 17.03.2018) को सर्व कल्याण यज्ञ का आयोजन पं. पूज्य श्रीमदजगद्गुरु रामशरणानन्द जी महाराज (ब्रह्मर्षि) गोसेवक के मार्ग दर्शन में हुआ।

जिसमें श्री योगेन्द्र सिंह आर्य जी की अध्यक्षता में स्वदेशी का प्रचार व भारतीय संस्कृति की रक्षा का संकल्प दिलाया गया। इस महायज्ञ में अनेक प्रतिष्ठित एवं गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

-श्री योगेन्द्र सिंह माथुर , सचिव

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली–60 द्वारा भारतीय नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2075 एवम् 144वें आर्य समाज स्थापना दिवस रविवार 18/3/2018 को यज्ञ, भजन, प्रवचन के द्वारा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने कहाँ महर्षि दयानन्द ने स्वदेश स्व धर्म एवं स्व संस्कृति के लिए अपना पवित्र जीवन आहुत कर दिया। इस अवसर पर माता स्व वैष्णो देवी सहगल जी के जन्म दिन के उपलक्ष्य में आर्य समाज राजेन्द्र नगर के प्रधान अशोक सहगल जी एवं परिवार की ओर से ''विवेक यज्ञ पद्धति'' नामक पुस्तक का विमोचन किया। इस अवसर पर परिवार की ओर से सुन्दर जलपान की व्यवस्था की गई।

-नरेन्द्र वलेचा, मंत्री

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-4-2018 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month
Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-20

सेवा में,

शुद्धि समाचार

अप्रैल – 2018

यह सब हमें क्यों नहीं पढ़ाया जाता?

आईए! जगाइए भारत का स्वाभिमान

1. विश्व का पहले लेखन कार्य का प्रमाण 5,500 वर्ष पूर्ण हड़प्पा संस्कृति के अन्तर्गत मिलता है। (Science Reporter, June 1999)

1. संस्कृत दुनियां की सबसे पहली भाषा है तथा सभी यूरोपियन भाषाओं की जननी है। संस्कृत ही कम्पयूटर सॉफ्टवेयर हेतु सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। (Forbes Magazine, July 1987)

3. विश्व का पहला विश्वविद्यालय तक्षशिला के रूप में 700 ई. पूर्व भारत में स्थापित था जहाँ पर दुनिया भर के 10,500 विद्यार्थी 60 विषयों का अध्ययन करते थे।

4. बारूद की खोज 8000 ई. पूर्व सर्वप्रथम भारत में हुई ।

5. वनस्पति शास्त्र की उत्पत्ति सर्वप्रथम भारत में हुई, जिसका प्रमाण वेदों में सुनियोजित रूप से वर्गीकृत विभिन्न वनस्पतियों के रूप में मिलता है।

6. दुनिया की सबसे पहली सुनियोजित आवासीय सभ्यता हड़प्पा और मोहनजोदड़ों के रूप में 2500 ई. पूर्व भारत में स्थापित हुई ।

7. सूर्य से पृथ्वी पर पहुँचने वाले प्रकाश की गणना भास्कराचार्य ने सर्वप्रथम भारत में की ।

8. यूरोपीय गणितज्ञों से पूर्व छठी शताब्दी में बोद्धायण ने पाई के मान की गणना की जो आज भी पाइथागोरस प्रमेय के रूप में जाना जाता है।

9. 5000 ई. पूर्व ही भारतीयों के 10 तक *गणना करने का ज्ञान था जबकि आज* भी 10 (टेरा) तक ही गणना की जाती है।

10. अंकों का आविष्कार 300 ई. पूर्व भारत में हुआ। (Prof. O.M. Mathew, Bhavan's Journal)

11. शून्य (0) का आविष्कार भारत में आर्यभट्ट ने किया।

12. अंकगणित का आविष्कार 200 ई. पूर्व भास्कराचार्य ने किया। (Encyclopedia Britannica)

13. बीजगणित का आविष्कार भारत में आर्यभट्ट ने किया। (Encyclopedia Britannica)

14. सर्वप्रथम ग्रहों की गणना आर्यभट्ट ने 499 ई. पूर्व की। (Jwiesh Encyclopedia)

15. मोहनजोदड़ों व हड़प्पा में मिले अवशेषों के अनुसार भारतीयों को त्रिकोणमिति व रेखागणित का 2500 ई. पूर्व ज्ञान था।

16. जर्मन लेखक डॉ. थॉमस आर्य के अनुसार सिन्धु घाटी सभ्यता में मिले भार–माप यंत्र भारतीयों के दशमलव प्रणाली के ज्ञान को दर्शाते हैं।

17. समय और काल की गणना करने वाला विश्व का पहला कलैण्डर भारत में लता देव ने 505 ई. पूर्व सूर्य सिद्धान्त नामक अपनी पुस्तक में वर्णित किया।

18. न्यूटन से भी पहले गुरूत्वाकर्षण का सिद्धान्त भारत में भास्कराचार्य ने प्रतिपादित किया। (Jwiesh Encyclopedia)

19. 3000 ई. पूर्व लोहे के प्रयोग के प्रमाण वेदों में वर्णित हैं, अशोक स्तम्भ भारतीयों के तत्वज्ञान का स्पष्ट प्रमाण है।

20. सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले प्रमाण सिद्ध करते हैं कि भारतीयों को 2500 ई. पूर्व ताम्बे तथा जस्ते की जानकारी थी। (The Current Science)

21. विभिन्न रासायनिक प्रक्रियाओं एवं रासायनिक रंगों का प्रयोग पांचवी शताब्दी में भारत द्वारा किया गया। (National Science Center, New Delhi)

22. विश्व का सबसे पहला औषधि विज्ञान भारतीयों ने आयुर्वेद के रूप में किया। महर्षि चरक ने 2500 वर्ष पूर्व औषध विज्ञान को आयुर्वेद के रूप में संकलित किया।

23. लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस के अनुसार 400 ई. पूर्व महर्षि सुश्रुत (भारतीय चिकित्सक) ने सर्वप्रथम प्लास्टिक सर्जरी का प्रयोग किया।

24. राईटब्रदर्स से भी अनेक वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती के पटु शिष्य श्री बापू जी तलपदे महाराष्ट्र निवासी ने मुम्बई के चौपाटी स्थान पर वैदिक विधि से बना वर्तमान युग का प्रथम विमान उड़ाया था।

25. हम भारतीयों के बहुत ही अहसानमंद है कि उन्होंने हमें गणना करना सिखाया। बिना गणना के कोई भी वैज्ञानिक खोज सम्भव नहीं थी। (अलबर्ट आइंस्टाइन)

26. भारत मानव जाति और संस्कृत व यूरोपियन भाषाओं की जननी है। दर्शन की शुरूआत भी यहीं से हुई। भारत कई मामलों में हम सभी की मातृभूमि है। (बिल डरंट, अमेरिकी इतिहासकार)

27. अगर मुझसे पूछा आए कि किस जगह मानव मस्तिष्क अपने चरम रूप में विकसित होता है। कहाँ समस्याओं का समाधान चुटकी बजाते ही निकल जाता है तो मै कहूँगा कि भारत ही वो जगह है। (मैक्समूलर, जर्मन स्कॉलर)

28. भारत के पास वैज्ञानिकों और इंजीनियरों का विश्व का दूसरा बड़ा समूह है।

29. भारत विश्व के 90 देशों में सॉफ्टवेयर निर्यात करता है। अमेरिका और जापान के बाद स्वदेशी सुपर कम्पयूटर बनाने वाला भारत तीसरा देश है।

30. वर्ष 1896 तक भारत विश्व में डायमंड का अकेला स्रोत था।

31. भारतीय ही दुनिया में सबसे पहले कपास उगाने वाले लोगों में थे। यहाँ तक कि रोम के सम्राट भी भारत से मंगाई गई सबसे बढ़िया कपास से बने कपड़े पहनते थे। मुगलों ने भारत आकर कपास से बने वस्त्रों को सुबह की ओस बताया। (अमर उजाला, समाचार पत्र, 15 अगस्त 2015)

32. भारत का सबसे प्राचीन नाम आर्यावर्त है और सृष्टि की उत्पत्ति भी इसी आर्यावर्त के एक भाग 'त्रिविष्ट्प' (तिब्बत्) में हुई। यहीं से सारी दुनिया में ज्ञान–विज्ञान फैला।

यदि हमारा ज्ञान–विज्ञान एवं इतिहास इतना गौरवशाली एवं समृद्ध है, तो भारत के छात्रों को इस जानकारी से वंचित क्यों रखा जाता है? आईए! वर्षों से भारतीयों को उनके ज्ञान से वंचित रखने के लिए चलाए जा रहे इस सुनियोजित षड्यंत्र का हम सब मिलकर प्रतिकार करें और अपने सोए हुए स्वाभिमान को जगाएँ। ('विश्वशांति के अध्यक्ष पाँच वैदिक सूत्र' पत्रिका से साभार)

–डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'
(डी. एन. वाई. व मॉस्टर कॉस्मिक चरित्र निर्माण मण्डल, एनर्जी हीलर)
ग्राम–शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली
मो. 9871644195

आपका रास्ता

भूलभुलैयों में भुल गया रास्ता, जाना कहां था कहां पड़ गया वास्ता ।
कहां मेरी मंजिल, कौन मेरी राह है। डर और भय से निकल रही आह है,
जगत का विस्तार आपकी माया की मार है,
किन्तु मेरी छोटी सी काया सरकार है।
मत भटकाओ, मुझे राह दिखाओ, आपको, आपके भक्तों का वास्ता ।
ले चलो मुझे जो है मेरा रास्ता ।
चारों ओर सुरा–सुंदरियो की वाह है, बाजार में सोने–चाँदी राह भी अथाह है
सबको आपकी माया से दुलार है, किन्तु मुझे तो माया पति की दरकार है।
घर ले चलो, अंगुली मेरी पकड़ो, आपसे मेरी आपको निजता का वास्ता,
पहुंचाये आप तक ले चलो वो रास्ता ।
ज्ञानी नही हूँ कि जान लूं कंहा कराह है,
भोगी नहीं हूँ कि माया में फंस कहूँ वाह–वाह है।
माया में फंसे है जो उन्हें, तुम्हारे वरदान की मार है।
अकड़ रहे जो विजेता बन कर, उन्हें भी तुम्हारे श्राप की हुंकार है।
किन्तु मैं तो भगत हूँ आपका, मेरा तो बस राम रतन ही काज है।
पकड़ कर हाथ, भव सागर तराओ,
तुम्हें तुम्हारे नाम का ही वास्ता, दिखाई पड़े बस आप का ही रास्ता ।

–देवेन्द्र कुमार मिश्रा,
मो. 9425405022

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह–सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश आर्य